



Hari Om

Araban is a bilingual and bimonthly magazine compiled, composed and published by the sannyasin disciples of Sri Swami Satyananda Saraswati for the benefit of all people who seek health, happiness and enlightenment. It contains the teachings of Sri Swami Sivananda, Sri Swami Satyananda, Swami Niranjanananda and Swami Satyasangananda, along with the programs of Sannyasa Peeth.

Editor: Swami Gyansiddhi Saraswati Assistant Editor: Swami Sivadhyanam Saraswati

Published by Sannyasa Peeth, c/o Ganga Darshan, Fort, Munger – 811201, Bihar.

Printed at Thomson Press India (Ltd), Haryana

© Sannyasa Peeth 2021

Membership is held on a yearly basis. Late subscriptions include issues from January to December. Please send your requests for application and all correspondence to:

> Sannyasa Peeth Paduka Darshan PO Ganga Darshan Fort, Munger, 811201 Bihar, India

☑ A self-addressed, stamped envelope must be sent along with enquiries to ensure a response to your request.

Front cover & plates: Satyam Poornima 2020, Paduka Darshan, Munger



SATYAM SPEAKS – सत्यम् वाणी

The Sivalingam is the symbol of higher consciousness. What is the real form of the higher self? When one is a little beyond the mind, what is the form of one's consciousness? When one has a perfected siddha, mind, what is the form of one's consciousness then? When one is in deep meditation and one has forgotten everything that is happening outside, what is the form of one's consciousness at that time? It is so difficult to describe!

-Swami Satyananda Saraswati

शिवलिंग उच्च चेतना का, आत्मा का प्रतीक है। आखिर आत्मा का क्या स्वरूप है? जब मन से थोड़ा ऊपर उठते हैं तो चेतना का क्या स्वरूप होता है? जब मन सिद्ध हो जाता है उस समय चेतना का क्या आकार होता है? गहरे ध्यान में जब बाहर की सुध-बुध नहीं रहती तब चेतना कैसी होती है? इसे समझाना कितना कठिन है!

—स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

Published and printed by Swami Kaivalyananda Saraswati on behalf of Sannyasa Peeth, Paduka Darshan, PO Ganga Darshan, Fort, Munger - 811201, Bihar.

Printed at Thomson Press India (Ltd), 18/35 Milestone, Delhi Mathura Rd., Faridabad, Haryana. **Owned** by Sannyasa Peeth **Editor**: Swami Gyansiddhi Saraswati



310160

Invoking the Divine

Year 10 Issue 1 • January-February 2021

न तु अहं कामये <mark>राज्यं</mark> न स्वर्गं नापुनर्भवम्। कामये दुःखतप्तानां प्राणिनां आर्त्तिनाशनम्॥

"I do not desire a kingdom or heaven or even liberation. My only desire is to alleviate the misery and affliction of others."

-Rantideva

Contents

- 2 Celestial Pleasures
- 3 In the Beginning a Dream
- 5 सत्यम् पूर्णिमा का श्रीगणेश
- 8 From Yoga Poornima to Satyam Poornima
- 11 शुभ संकेत

- 12 गुरु का चामत्कारिक आशीर्वाद
- 14 A Guru's Miracle and Lesson
- 16 Back in Vedic Times
- 17 Ma Ganga and Siva
- 19 चलन्तु महादेव
- 21 The Naga
- 22 Abhishek

- 23 पूर्णता और पवित्रता
- 26 आनन्द की अनुभूति
- 27 Wandering Siva
- 29 अभिषेकप्रिय: शिव:
- 31 IMPRESSIONS
- 36 स्वर्णिम स्मतियाँ
- 41 Satyam Poornima In the Fullness of Time
- 46 To Become One

Celestial Pleasures

Swami Satyananda Saraswati

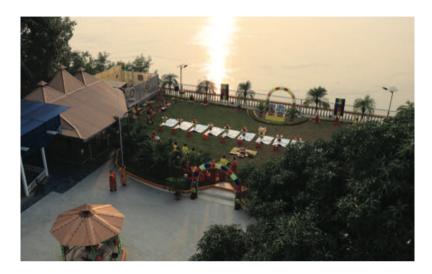


This year is not very cold. The wind is mild and there is a fragrance in the air. The fields are green, mist covers the surrounding fields and you cannot see them clearly. It is just like *avidya*, ignorance, which until removed through knowledge and guru's grace makes everything around you hazy. So, you will have celestial pleasures here tomorrow morning. When dew drops trickle down through the covering over your heads, you will have the feeling that not only is Lord Siva's *abhishek*, his ceremonial bath, being done, but that your abhishek is also being done.

– 18 December 2001, Rikhiapeeth

In the Beginning - a Dream

Swami Niranjanananda Saraswati



In Rikhia I had a dream. In the dream I saw the river Ganga and twelve Sivalingas on the banks of the river. One Naga sadhu with twelve kalash was doing jal abhishek to the twelve lingas. This dream came at midnight on the first night of Sat Chandi. I woke up and started thinking why this type of dream had come, and just before slipping back into sleep again, I asked myself, why this dream?

The answer that came was that there was something I had to do in Munger during Yoga Poornima. Until now we have not really celebrated Yoga Poornima in Munger, it has been a Rikhia event, yet the yoga bhoomi and karma bhoomi of Sri Swamiji is Munger. And here we don't celebrate his birthday, it feels weird. This dream was like an indication of what form the Yoga Poornima should take in Munger.

The next day I spoke with Swami Satsangi and she was also happy with the idea. She said, "Yes, it should happen." Then she asked me, "What name would you give, for how can we

have one Yoga Poornima in Munger and one in Rikhia, the same event in two locations?" I said, "In Munger we will call it 'Satyam Poornima'." She said, "Can we change it, because yoga is Munger." I said, "No, Swamiji himself gave the name Yoga Poornima." Satyam Poornima will be starting this year in the same period that Yoga Poornima begins in Rikhia.

I had been to Paduka Darshan yesterday to decide, where it will be done. In the upper lawn, where we had the Guru Yantra, we will have the twelve Sivalingas. Satyameshwar will be the thirteenth one, inside Satyameshwar Peeth. He likes being number thirteen. Even when he arrived at Akhara, he was number thirteen and bigger than the other twelve which were all the same size. He has a special affinity with the number thirteen. Thirteen in Hindi is tera, and tera also means yours. So Satyameshwar is always yours as he is always tera.

The pandits will be chanting the complete *Rudri* which will take about one and half hours. During the chanting of *Rudri*, the abhisheks will happen. This year it is more on an experimental basis. When we started off with our Hanuman Chalisa or Lakshmi-Narayana yajna, ten, twenty people, fifty people came, and every year more and more people kept coming.

There is another nice news. When the decision to do Satyam Poornima was taken I said to Swami Satsangi, "I need a Sivalinga from Rikhia." She asked me, "Which one?" I said, "The one from Sri Swamiji's room in Tulsi Kutir." It was the Sivalinga I had kept on his lap when he was in samadhi. So she said, "I hope he will come back." I said, "Yes, we will do one thing – after every Sat Chandi, we will bring Sivaji to Munger to be at the Satyam Poornima, then he will participate in my panchagni and after the panchagni we will take him back to Rikhia. Every year he will become like the Chalantu Mahadev, the walking Siva, and who knows, maybe one hundred years later there might be ayatra of Sivaji from Rikhia to Munger."

– 22 December 2020, Ganga Darshan

सत्यम् पूर्णिमा का श्रीगणेश

स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती

आज हमारे लिये, और योग नगरी मुंगेर के लिये भी बड़े गौरव की बात है कि सन् 2020 के अंत में योग नगरी में हमलोग अपने पूज्य गुरुदेव, श्री स्वामी सत्यानन्द जी का अवतरण दिवस मना रहे हैं। पूर्व में हमारे गुरुदेव ने अपना जन्मदिवस मनाने की अनुमित कभी नहीं दी थी। लोग जानते भी नहीं थे कि उनकी जन्म तिथि क्या थी, क्योंकि जब हमारे गुरुदेव श्री स्वामी सत्यानंद जी का जन्म 1923 में कुमाऊँ के एक गाँव में हुआ था, तो वहाँ किसी प्रकार का रिकॉर्ड नहीं रखा जाता था।

2000 के दशक में एक बार हमें उनके गाँव जाने का अवसर मिला, अल्मोड़ा जिला के एक छोटे से कसबे में। वहाँ पर हमने पूछा कि स्वामीजी की जन्मपत्री वगैरह कुछ है क्या? तो घर के बुजुर्ग लोगों ने कहा कि जन्मपत्री तो नहीं है, लेकिन लिखा है कि सन् 1923 के मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन उनका जन्म हुआ था। 1923 में मार्गशीर्ष पूर्णिमा की अंग्रेजी तारीख थी 23 दिसम्बर की रात्रि। ईसा मसीह का जन्म 24 दिसम्बर की रात्रि में हुआ था और हमारे गुरुदेव का जन्म 1923 में 23 दिसम्बर की रात्रि को मार्गशीर्ष पूर्णिमा पर हुआ।





जब यह बात मालूम पड़ी तो हमलोग गुरुदेव के पास गये और पूछा कि क्या मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन हमलोग आपका जन्मदिवस मना सकते हैं? पहले तो उन्होंने कहा कि नहीं, अभी तक जन्मदिवस नहीं मनाये हो तो फिर आगे क्यों मनाना। पर बाद में भक्तों की भावनाओं को समझकर उन्होंने सन् 2008 में अपने जन्मदिवस को मनाने की अनुमित प्रदान की और उस समय इस कार्यक्रम का नाम रखा गया था योग पूर्णिमा उत्सव क्योंकि हमारे गुरुजी, योग की सर्वोच्च उपलब्धि के प्रतीक हैं। एक सामान्य मनुष्य अपने पुरुषार्थ और पिरश्रम से ईश्वरत्व की अनुभूति कर सकता है – यह पूरा क्रम और विवरण हमारे गुरुदेव के जीवन में स्पष्ट रूप से दिखलाई देता है। निश्चित रूप से उनमें आध्यात्मिक संस्कार थे, निश्चित रूप में उन्हें मानव समाज के लिये कुछ करना था, वे एक प्रयोजन से इस धरती पर आये थे, किन्तु उनकी यात्रा एक सामान्य व्यक्ति की तरह आरम्भ होती है और एक सिद्ध के रूप में सम्पन्न होती है।

सन् 2008 में हमलोगों ने योग पूर्णिमा का पहला उत्सव गुरुदेव के सान्निध्य में उनकी तपोभूमि रिखियापीठ में बहुत धूम-धाम से सम्पन्न किया। योग पूर्णिमा के दौरान गुरुदेव का सान्निध्य 2008 और 2009, दो वर्षों तक हम सबको प्राप्त हुआ। उसके पश्चात् 2009 में वे समाधि ग्रहण करते हैं, और तब से रिखिया में प्रतिवर्ष योग पूर्णिमा का कार्यक्रम मनाया जाता रहा है।

2008 से ही मन में इच्छा थी कि हमलोग योग नगरी मुंगेर में भी गुरुदेव के जन्मदिवस को धूम-धाम से मनायें, लेकिन साथ ही प्रतीक्षा भी थी – एक संकेत की, एक आदेश की और एक समय की। रिखिया में 2008 से 2019 तक हम योग पूर्णिमा में शामिल हुए, बारह साल। इस साल जब शतचण्डी महायज्ञ में भाग लेने के लिये रिखिया गये थे, तो मन में यही विचार था कि योग पूर्णिमा भी इस वर्ष रिखिया में सम्पन्न होगी। किन्तु शतचण्डी महायज्ञ के प्रथम दिन एक स्वप्न



का दृश्य देखते हैं। वह स्वप्न क्या था? गंगा नदी के तट पर 12 शिवलिंग थे, और एक जटाधारी, नागा संन्यासी 12 शिवलिंगों पर कलश से अभिषेक कर रहा था। स्वप्न में यह दृश्य दिखलाई दिया और जब निद्रा टूटी तो विचार शुरू हुआ, इस स्वप्न का क्या अर्थ हो सकता है? उसी समय मुंगेर की गंगा जी, पादुका दर्शन का यह स्थान और यहाँ पर 12 शिवलिंग दिखलाई दिये। हमने कहा कि आदेश मिल गया है, अब मुंगेर में भी 12 वर्षों के बाद तेरहवें वर्ष में हमलोग योग पूर्णिमा का कार्यक्रम आरम्भ करेंगे।

हमने स्वामी सत्संगी से चर्चा की। उन्होंने भी इस स्वप्न और इस चिंतन को सहर्ष स्वीकार किया। उन्होंने हमसे पूछा कि मुंगेर में जो पूर्णिमा मनाओगे उसका क्या नाम होगा? हमने कहा, चूँकि यह पूर्णिमा गुरु को समर्पित है और उनके अवतरण दिवस का प्रतीक है, इसिलये हम मुंगेर की योग पूर्णिमा को 'सत्यम् पूर्णिमा' के नाम से बुलायेंगे। इसीलिये इस साल योग नगरी में प्रथम सत्यम् पूर्णिमा का आयोजन किया गया है और यह तेरहवाँ साल है। तेरह से तेरा का मतलब निकलता है, 'तेरा तुझको अर्पण।'

इस तेरहवें साल में हमलोग जो आराधना कर रहे हैं वह विश्व योगपीठ, गंगादर्शन और संन्यासपीठ, पादुकादर्शन, दोनों के संयुक्त तत्त्वावधान में सरल और सहज तरीके से प्रारम्भ हो रही है। साथ ही हम आभार व्यक्त करते हैं मुंगेर के युवा संगठन के प्रति। उन्होंने जैसे ही जाना कि हम एक कार्यक्रम करना चाहते हैं और पिरिस्थिति के कारण उसको सीमित तरीके से करना है, तो उन्होंने कहा कि स्वामीजी, हमलोग पूरी सहायता करेंगे, और उनके सहयोग से योग नगरी मुंगेर आज प्रथम सत्यम् पूर्णिमा मना रही है। इसलिये मुंगेर के हमारे युवा योग मित्र मण्डल के सदस्य भी साधुवाद के पात्र हैं।

– 25 दिसम्बर 2020, पादुका दर्शन

From Yoga Poornima to Satyam Poornima

Swami Niranjanananda Saraswati



The city of yoga celebrates Satyam Poornima. Satyam Poornima is the celebration of the birthday of our master Sri Swami Satyananda Saraswati. He was born in 1923 in a small village in the district of Almora, in the Himalayas. When he was born people did not register births or deaths the way it is mandatory now for everyone. In those days no note, no record was kept of when people died or when people were born. So we did not know when the birthday of Sri Swamiji was. For many years, people speculated and chose different dates to celebrate his birthday according to their convenience, however it was never the actual date.

In 2006, I had gone to the village where Paramahamsaji was born and I asked the elders of the family if they had any remembrance, record or even an astrological chart of Paramahamsaji's birth. They said that in a village they did

not have that facility or tradition, but they remembered that he was born during the Margashirsha poornima in 1923. That was the first indication of the day he was born, the full moon of Margashirsha in 1923. The full moon of Margashirsha in 1923 fell on 23rd December night. So knowing the day of his birth according to the tithi, we celebrate his birthday on the full moon of every December

When we found out the birth date, we requested Sri Swamiji to allow the devotees to celebrate his birthday. First he said, "No, you have not celebrated it so far. Why should you celebrate it now?" But then he gave his permission. The first Yoga Poornima was celebrated in 2008 in Rikhiapeeth in the presence of Sri Swamiji. In 2008 and 2009, for two years we had the physical presence of Sri Swamiji during the celebration of Yoga Poornima, celebrating the birth of his physical body.

Then he attained Mahasamadhi in 2009, and we continued with the tradition of Yoga Poornima in Rikhiapeeth. Every year I used to participate in the Sat Chandi and Yoga Poornima celebrations, along with Swami Satyasangananda. This year also I had gone to Rikhiapeeth for the Sat Chandi program and I was planning to be there for Yoga Poornima as well, like all the other years. At the same time, there was a yearning in my heart that when the time is right an indication will come when we can celebrate his physical birth in the form of Yoga Poornima at Munger.

This indication came on the first night of the Sat Chandi Mahayajna. The yajna had concluded for the day, and we went to our rooms at night to rest and sleep. In my sleep I had a dream, and in the dream I saw a flowing river. On the banks of the river, there were twelve Sivalingas and one Naga sannyasi with matted locks was offering water with kalash to each Sivalinga. In the background there was chanting of the Rudri. The sadhu was performing the abhishek with kalash, going from one Sivalinga to another to another to all the twelve with the sound of Rudri floating in the air. That was the dream. I woke up and I wondered, 'Why the dream?' Then I realized

this was the indication that I was waiting for to start Yoga Poornima in Munger – the river was the Ganga, there were the lingas and the Naga sadhu was the sannyasin. This came like an indication and permission, "Now you can perform Yoga Poornima in Munger."

When I met Swami Satsangi I spoke to her about the dream, and instantly she agreed, "Yes, it is about time. Twelve years Yoga Poornima has happened in Rikhiapeeth and now things have to start in Munger as well." Then she asked me, "What name will this function or celebration have?" I said, "Sri Swamiji himself gave the name Yoga Poornima for Rikhia symbolizing the attainment of yoga in the life of a person who rose from a normal human being to become the siddha of the highest calibre. In Munger we will call this function, Satyam Poornima since it is dedicated to the descent of our master in our life." She agreed wholeheartedly to the whole concept and idea.

When I came to Munger, nothing was ready and I mentioned something to the chief of the Yuva Yoga Mitra Mandal who said, "Swamiji we will help in organizing, preparing and in assisting during this celebration." For the last three days these people have been coming to Paduka Darshan, preparing everything, decorating everything, organizing everything and getting it ready to be the first celebration of Satyam Poornima in the City of Yoga. The sannyasins had a restful and pleasant time.

It is with great joy and pride that today along with the eminent citizens of Munger and along with the members of the Yuva Yoga Mitra Mandal, we are celebrating the first Satyam Poornima on the grounds of Paduka Darshan as a joint effort and collaboration of Vishwa Yogapeeth, Munger, and Sannyasa Peeth, Munger. It is with gratitude that we offer our humble pranams, prayers and invocation to Siva and Satyam. They are the inspiration and motivation; with Sivam, Satyam, and with the Siva Aradhana for Satyam, let us make our lives Sundaram, beautiful.

– 25 December 2020, Paduka Darshan

शुभ संकेत

स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती



आज पादुकादर्शन आश्रम में आयोजित इस अनुपम सत्यम् पूर्णिमा का दूसरा दिन है और आज भी 12 शिवलिंगों का जलाभिषेक सम्पन्न होगा। आपने सुना था एक स्वप्न के बारे में – गंगा किनारे 12 शिवलिंग और एक साधु कलशों से 12 शिवलिंगों का अभिषेक कर रहा था। वही स्वप्न प्रेरणा बना, संकेत बना, आदेश बना इस सत्यम् पूर्णिमा के सरल, सहज और सुन्दर आयोजन के लिये। लेकिन यह संकेत यहाँ पर समाप्त नहीं हुआ, बिल्क स्वप्न के अतिरिक्त भी आश्रम में कुछ ऐसी घटनायें घटित हुयीं जिनसे यह स्पष्ट साबित होता है कि पूज्य गुरुदेव का अनुमोदन, स्वीकृति, आशीर्वाद और सान्निध्य इस आयोजन को प्राप्त है।

हमने सत्यम् पूर्णिमा का कार्यक्रम 25 दिसम्बर से आरम्भ करने का निर्णय लिया था क्योंकि इसी तिथि पर रिखियापीठ में भी 12 वर्षों से चल रहा योग पूर्णिमा का कार्यक्रम आयोजित होता है। दोनों का समय एक रहेगा। इस दृष्टिकोण से यहाँ भी 25 से 29 दिसम्बर तक सत्यम् पूर्णिमा मनाने का निर्णय लिया गया, और 24 दिसम्बर की संध्या को इस आयोजन को पूज्य गुरुदेव, श्री स्वामी सत्यानंदजी का आशीर्वाद भी मिला। कैसे मिला? वह एक संन्यासी की अलग कहानी है।

– 26 दिसम्बर 2020, पादुका दर्शन

गुरु का चामत्कारिक आशीर्वाद स्वामी ज्ञानसिद्धि सरस्वती

गुरुवार, 24 दिसम्बर 2020 की यह घटना है। परम्परानुसार परमहंस जी के रात्रि विश्राम के लिये उनका कक्ष तैयार करने मैं शाम सवा चार बजे श्रीनिवास गई। परमहंस जी के कक्ष में प्रवेश करने पर कुछ विचित्र-सी अनुभूति हुई। उनके बिस्तर के सामने लगी चटाई को साफ करने के उद्देश्य से जैसे ही उसे उठाया तो हतप्रभ रह गई, उसके नीचे लबालब पानी भरा था।

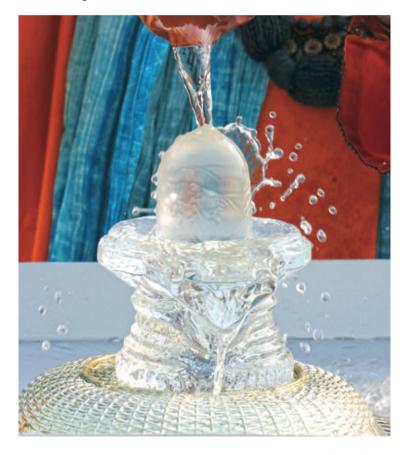
मैं विचार करने लगी – न तो अभी पिछले कुछ दिनों से बरसात ही हुई है, न यहाँ कक्ष के बीचों-बीच पानी आने का और कोई स्रोत है। मैंने घूम-घूम कर कक्ष को चारों ओर से देखा। सब तरफ सूखा था, कहीं पानी की एक बूँद भी नहीं थी। फिर पानी भी एकदम ताजा, स्वच्छ और पारदर्शी है। कहीं पहले से छूटा होता तो धूल के साथ मिलकर मटमैला दिखता या उसमें चटाई का रंग मिला हुआ दिखता या चारों ओर से सूखकर बीच में इकट्ठा हुआ दिखता। पर यहाँ तो चटाई के आकार में लबालब भरा हुआ है, और किसी कोने से भी बाहर रिसकर नहीं आ रहा है। चटाई भी ऊपर से एकदम सूखी है।

फिर मैंने उनके बिस्तर को छूकर देखा, एकदम सूखा। उनकी आरामकुर्सी पर लगे आसन को छूकर देखा, एकदम सूखा, कहीं थोड़ी नमी का एहसास भी नहीं हुआ। मैंने हैरानी में पड़कर एक और स्वामी को फोन किया। वह भी चिकत होकर देखने आयी। उसने पूछा, कहीं छत में लीकेज तो नहीं है? मैंने कहा, बिल्कुल नहीं, यहाँ तो भारी मॉनसून में भी कभी एक बूँद पानी नहीं देखा है। हमलोगों ने इस अनोखे दृश्य को कई दिशाओं से अपने फोन के कैमरे में कैद करने का प्रयास किया, पर सफलता नहीं मिली। फोटो में सिर्फ झिलमिलाती हुई ट्यूबलाइट ही दिखलाई पड़ती!

हमलोग मिलकर विचार करने लगे – कल से सत्यम् पूर्णिमा का प्रथम अनुष्ठान आरम्भ होने वाला है। क्या इस अनुष्ठान की पूर्वसंध्या पर परमहंस जी ने जल तत्त्व के रूप में हमें अपनी उपस्थित का एहसास तो नहीं कराया है? हमलोगों ने स्वामीजी के श्रीमुख से एक दिन पूर्व ही सुना था कि शतचण्डी महायज्ञ के प्रथम दिन उन्हें एक स्वप्न आया था, जिसमें उन्होंने गंगा के किनारे एक नागा साधु को बारह शिवलिंगों का जलाभिषेक करते देखा था। इस स्वप्न के संकेत को समझकर, इसे ईश्वरीय आदेश मानकर उन्होंने मुंगर के पादुका दर्शन परिसर में गंगा के किनारे बारह शिवलिंगों का जलाभिषेक करते हुए, प्रतिवर्ष अपने गुरु, श्री स्वामी सत्यानंद सरस्वती के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सत्यम् पूर्णिमा मनाने का निश्चय किया है।

अभी तक मैंने चमत्कारों के बारे में केवल सुना ही था, आज पहली बार अपनी आँखों से देखा कि कैसे गुरु की दिव्य शक्ति अभिव्यक्त होकर हमें अपनी उपस्थिति का अहसास कराती है।

मन में ये विचार भी उठने लगे कि जल तत्त्व के ही रूप में क्यों? फिर जल के गुण एक-एक कर जहन में उभरने लगे – जल जीवनप्रदाता है, जीवन का संरक्षक है। जल घोर तपती दोपहरी में भी शीतलता प्रदान करता है। जल पारदर्शी है। जल हर प्रकार के ताप को शांत करता है। और जल का सबसे बड़ा गुण है सतत् प्रवाहमान रहना। वह जब नदी-निर्झर के रूप में बहता है तो सीधे लक्ष्य तक पहुँचकर ही विश्राम करता है। राह की कोई बाधा उसे रोक नहीं पाती। वह राह में आने वाली बाधाओं से, पत्थरों और चट्टानों से टकराकर अपना सिर नहीं फोड़ता, बल्कि बगल से होकर अपनी राह बना लेता है, और अंतत: अपने लक्ष्य सागर से जा मिलता है। हम सबको भी इस गुण को अपनाकर जीवन में आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिये।



A Guru's Miracle

Swami Gyansiddhi Saraswati

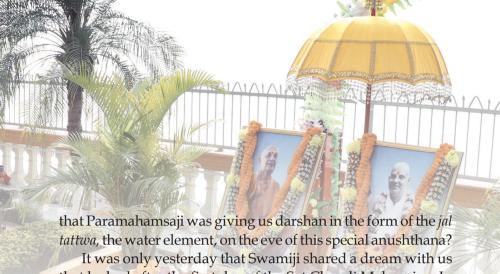
On Thursday, 24 December, I had gone to Sri Nivas at 4.30 in the evening to prepare Paramahamsaji's room for the night. As soon as I entered his room, I had a feeling that something was different. As I reached out to lift the rug at the foot of his bed to be able to clean the area, I was stunned; it was soaking wet!

I started thinking – neither has there been any rain over the past few days, nor was there any source of water right in the middle of the room. I scanned every inch of the room, everything was totally dry and there was not even a drop of water anywhere. Moreover, the water under the rug looked fresh, clean and crystal clear. If it had been there for some time, it would have been a little dirty and perhaps the colour from the rug might have also been visible or it might have been dry all around except for a wet patch in the centre. However, the whole area under the rug was full of water. It was not as if the water had dripped into the room from somewhere outside. The rug was also completely dry on the top.

I checked Paramahamsaji's bed, it was totally dry. I patted the upholstery on his arm chair; there was not even a hint of dampness, let alone any water. I was at a loss and called another swami. She was surprised and came to see for herself. When she asked me if it could be a leak through the roof, I said that even in the heaviest of monsoon we have never seen even a drop of water come into this room.

We tried to take photographs of this extremely extraordinary sight but had no success. All that was seen in the pictures was a flickering tubelight!

Both of us started thinking - the first Satyam Poornima anushthana was going to commence tomorrow. Could it be



It was only yesterday that Swamiji shared a dream with us that he had after the first day of the Sat Chandi Mahayajna. In his dream, he saw a Naga sadhu performing abhishek to twelve Sivalingas on the banks of the Ganga. Taking it to be a sign and accepting it as a divine mandate, he decided to celebrate Satyam Poornima to commemorate the birthday of his guru, Sri Swami Satyananda, with the abhishek of twelve Sivalingas along the banks of the Ganga at Paduka Darshan in Munger.

Until today I had only heard about miracles and now for the first time I saw with my own eyes how the divine energy of the guru materializes to give us a tangible experience of his presence.

Then a question arose in my mind, 'What was the significance of the darshan in the form of jal tattwa?' Different qualities of the water element flooded my awareness: water gives life and protects life; even on the most scorching summer afternoon, water bestows refreshing coolness; water is pure and transparent; water cools and quietens every kind of heat.

The most significant quality of water is that it always flows. As a river or a stream, it flows without rest until it reaches its goal and merges with the sea or ocean. No obstacle or block can stop its flow. Instead of confronting and fighting with the rocks and stones along its path, it merely flows around them and finds the way to its destination.

This is a quality which we all can imbibe in our attempt to progress on our chosen path. \blacksquare

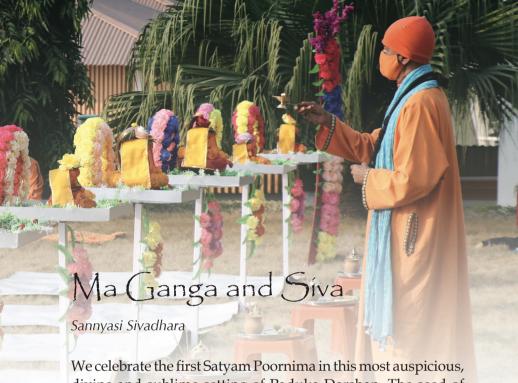


Welcome to the second day of Satyam Poornima at Paduka Darshan, Sannyasa Peeth, Munger. The invocation and the abhishek of the twelve Sivalingas began here yesterday to mark the beginning of Satyam Poornima. Today also the abhishek is being performed to the chanting of *Rudri* and the vedic mantras. The abhishek of the twelve Sivalingas is a special moment in time.

Siva is, of course, the greatest of the yogis. Siva is an energy which represents effulgent consciousness, the transcendental nature. The replica of that transcendental Siva nature is the Sivalinga. Since time immemorial, the way to invoke Siva's grace and energy in the Sivalinga has remained unchanged. The way and method in which the abhishek is performed with the chanting of mantras is possibly the same manner, the same mantra and routine that our ancestors performed during the vedic times. The mantra and the procedure has not changed.

The chanting of these mantras have not changed, it carries the same energy, the same devotion, faith, the same aspiration that the vedic seers had when they invoked the grace of Siva. I am sure, and I have heard from people who were present yesterday, that the feeling here is of simplicity, beauty, happiness and peace. This is the nature of Siva, who brings auspiciousness in the lives of people.

– 26 December 2020, Paduka Darshan



We celebrate the first Satyam Poornima in this most auspicious, divine and sublime setting of Paduka Darshan. The seed of this anushthana revealed itself to Swami Niranjananandaji in a dream at Rikhiapeeth in which he saw twelve Sivalingas on the sandy banks of the Ganga. They were being worshipped with abhishek by a Naga sadhu who was pouring water from twelve pots or kalash onto this row of twelve Sivalingas. This seed manifests in material form on the banks of the river Ganga here in Munger, the seat of Ganga Darshan Vishwa Yogapeeth and Sannyasa Peeth, the first and third missions of Sri Swamiji.

It takes this form as the celebration of Satyam Poornima, the celebration of the fullness of the purity that we experience in the life of Sri Swamiji, truth, bliss, joy and auspiciousness. The scene was of a Naga baba on the sandy banks of the Ganga and it has a very deep significance as the relationship between Ma Ganga and Siva, manifesting as Satyam and Sundaram.

Ma Ganga represents the ceaseless flow of purity meeting its dissolution in the ocean. This flow of purity is what nourishes and nurtures all physical existence on Earth. Before Ma Ganga descends from the heavens, she swirls around

in the matted locks of Siva and then descends upon Earth. Siva represents pure consciousness and the manifest form of that consciousness is the Sivalinga. The worship of twelve Sivalingas represents pure consciousness along the banks of the Ganga which nourishes and nurtures us all for eons. She has been the benevolent witness of changes that have happened over time and continue to happen.

What is the significance of this river, the purity of the river and the Siva consciousness to our lives? The vision and mission of the masters of our tradition, Swami Sivananda and Swami Satyananda, is also like the river Ganga. The relationship that Swami Satyananda had with the river Ganga is a very deep one, starting with his time spent in Rishikesh with his master Swami Sivananda. He also had a deep and significant experience at Gangotri which then comes flowing down and manifests in Munger. This river of inspiration, this river of blessings is our Ganga, which nourishes and nurtures our spiritual journey and our spiritual life.

The celebration of Satyam Poornima is an opportunity to dive deep into this divine river which flows ceaselessly and



will continue to flow, manifesting the vision and mission of truth, auspiciousness and beauty, Satyam, Sivam and Sundaram. It is our opportunity and responsibility as well as great privilege to be present here at this first invocation and first celebration of Satyam Poornima. May we strive to make ourselves capable recipients of this grace, to be able to dive deep into this divine river and become part of this beauty, vision and mission.

चलन्तु महादेव

स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती



पादुका दर्शन में आयोजित इस अनुपम सत्यम् पूर्णिमा के तीसरे दिन की आराधना में आप सबका स्वागत है। बहुत ही कम लोगों को सौभाग्य मिलता है कि गंगा के पावन तट पर शिव जी की आराधना में शामिल हों, जो इतनी सहजता, सादगी और सौन्दर्य से परिपूर्ण हो। इस आराधना में माँ गंगा का आशीर्वाद हम सबको प्राप्त है, और उनके पावन तट पर बैठकर उनकी पवित्रता, सौम्यता, शालीनता और दिव्यता का अनुभव हम सब कर रहे हैं।

योग पूर्णिमाँ का यह तेरहवाँ साल है, और तेरहवें साल में तेरा तुझको अर्पण की भावना रखते हुए, एक लघु रूप में सत्यम् पूर्णिमा का आयोजन यहाँ पर किया गया है। अब यह मुंगेर योग नगरी का एक अभिन्न अंग बनकर रहेगा। जैसे संन्यासपीठ में श्री लक्ष्मीनारायण महायज्ञ मुंगेर की एक पहचान बन गई है, उसी प्रकार से सत्यम् पूर्णिमा भी मुंगेर की एक पहचान बनेगी। इस प्रकार सत्यम् पूर्णिमा का शुभारम्भ, जो वर्षों पहले मुंगेर में होना चाहिये था, इस साल हो रहा है। इसका श्री गणेश इस साल हो रहा है, क्योंकि अभी ही ऐसा संकेत मिला है और गुरु जी का आदेश भी हुआ है। इसका संकेत रिखिया में एक स्वप्न के रूप में हुआ था। स्वप्न में देखा कि

गंगा का किनारा है, गंगा किनारे तट पर 12 शिवलिंग हैं, और एक नागा साधु 12 शिवलिंगों का अभिषेक कर रहा था। स्वप्न से यह संकेत मिला कि अब इस साल से मुंगेर में योग पूर्णिमा का कार्यक्रम होना है। 25 तारीख को यहाँ कार्यक्रम शुरू करने से पहले 24 की शाम को जब आश्रम परम्परा के अनुसार कुछ लोग गुरु जी के कमरे में उनका बिस्तर बनाने के लिये गये तो देखा कि पैर रखने की चटाई के नीचे तीन लोटा एकदम ताजा पानी पड़ा हुआ है। चार दिन से कमरे में कोई गया नहीं था। बारिश नहीं, पूरा कमरा सूखा है, बिस्तर सूखा है, खिड़की-दरवाजा सूखा है, लेकिन कमरे के बीच, जहाँ पर गुरुजी के चरणों के लिये चटाई रखे हैं, उसके नीचे पानी है! यह भी ऐसा संकेत था मानो तुम्हारे अभिषेक कार्यक्रम की स्वीकृति, उसका आदेश तुम्हें यहाँ पर इस रूप में मिल रहा है। हमने इस घटना को इस रूप में लिया कि किसी ने गुरुजी का पाद-प्रक्षालन किया, उनके चरणों का अभिषेक किया और उसी का जल वहाँ पर था। इस प्रकार ये दो संकेत मिले हैं और दोनों बहुत शुभ हैं।

इस सत्यम् पूर्णिमा की एक और विशेषता है कि यहाँ पर रिखियापीठ से एक शिवलिंग को लाये हैं जो पूज्य गुरुदेव की समाधि के समय उनके गोद में रखा गया था। ये दो शिवलिंग भाई हैं, एक रिखियापीठ में है और दूसरा मुंगेर में। जब स्वामी सत्संगी से हमने कहा कि रिखिया की उपस्थित और आशीर्वाद के रूप में हमें कुछ चाहिये, तो उन्होंने कहा कि आप उस शिवलिंग को ले जाओ जो गुरुजी के गोद में था। वे आपके साथ पंचाग्नि तक रहेंगे और पंचाग्नि के बाद ससम्मान वापस रिखिया लौट आयेंगे। तो यह भी एक सुंदर परम्परा का निर्माण हो रहा है कि हर शतचण्डी महायज्ञ के पश्चात् योग पूर्णिमा के लिये स्वामीजी का शिवलिंग मुंगेर आयेगा, पंचाग्नि तक साथ रहेगा और पंचाग्नि के पश्चात् विधिवत् उनको वापस रिखिया ले जायेंगे। यह एक बहुत ही सुंदर संयोग है कि दो शिवलिंग स्वामीजी की महासमाधि के समय उनके गोद में रखे गये थे, एक को यहाँ ले आये थे, दूसरा रिखिया में था और वही शिवलिंग अब मुंगेर आया है। ओडिशा में एक परम्परा है, चलन्तु जगन्नाथ की। उसी प्रकार से यहाँ भी अब चलन्तु महादेव की परम्परा शुरू हो गई है जो प्रति वर्ष बिहार और झारखण्ड के बीच अपनी यात्रा सम्पन्न करेंगे। यह भी इस सत्यम् पूर्णिमा की एक विशेषता है।

– 27 दिसम्बर 2020, पादुका दर्शन



The Naga

Swami Niranjanananda Saraswati

The abhishek of the twelve Sivalingas being performed by a Naga sadhu in the dream also has a deeper significance. People today think of Naga as a naked sadhu who smears the body with ashes.

According to tradition, in the progression of sannyasa there are different stages. When you first come to the ashram and are initiated, then in the course

ashram and are initiated, then in the course of your journey in life you go through different stages. Kutichak, bahudak, hamsa, paramahamsa and then comes naga, avadhoot, trigunatita. In this progression, nagas represent paramahamsas who are in the process of becoming avadhoot and trigunatita. It is a very high state of sannyasa, and to see a Naga perform the abhishek is not just a naked sadhu from the street or an ashram. It is a person who is in tune with the Siva consciousness, who is experiencing it, living it, who is immersed in it.

The whole concept of the river Ganga representing purity, twelve Sivalingas representing the transcendental consciousness and the Naga representing the human journey from material to transcendental in the tradition of sannyasa is a unique and beautiful *sanket* or indication for the commencement of Satyam Poornima in Munger.

We are blessed to receive the blessings of Mother Ganga and we are blessed to receive the blessings of Lord Siva. We are blessed to receive the blessings of the gurus and the guru parampara, who represent the naga nature, the nature which is immersed in the transcendental nature. This is the significance of the dream as I understand it.

– 27 December 2020, Paduka Darshan

Abhishek

Swami Sivananda Saraswati



When you do abhishek with bhava and devotion, your mind is concentrated. Your heart is filled with the image of the Lord and divine thoughts. You forget your body and its relation to your surroundings. Egoism gradually vanishes. When there is forgetfulness, you begin to enjoy and taste the eternal bliss of Siva.

Selfishness slowly vanishes. You derive immense joy. You begin to increase your offerings unto God. Self-sacrifice and self-surrender come in. Naturally, there is an outpouring from your heart, "I am Thine, my Lord." It is the mental bhava that counts and not the outward show.

The abhishek water or other articles used for abhishek are considered very sacred and bestow

immense benefits on the devotees who take them as Siva's prasad. It purifies the heart and destroys countless sins. It must be taken with intense bhava and faith. ■

पूर्णता और पवित्रता

स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती

सत्यम् पूर्णिमा की शिव आराधना में आप सबका आज चौथे दिन स्वागत है। हमारी परंपरा में हमारे परम गुरुदेव से भगवान शंकर का और माँ गंगा का एक अभिन्न संबंध रहा है। दक्षिण भारत के एक महान् संत हुए हैं जिनका नाम है अप्पैया दीक्षित। वे बहुत बड़े शिवभक्त थे, और उन्होंने किसी मन्नत को लेकर शिव जी की आराधना की। रात्रि में आराधना की पूर्णाहुति पर अप्पैया दीक्षित के स्वप्न में महादेव आते हैं और उनकी समस्या का समाधान करते हुए कहते हैं कि तुम्हारे वंश की सातवीं पीढ़ी में मेरा जन्म होगा। और अप्पैया दीक्षित की सातवीं पीढ़ी में ताम्रपर्णी नदी के तट पर हमारे परमगुरु, स्वामी शिवानन्द जी का अवतरण होता है। जब तक वे अपने पूर्वाश्रम में थे, भक्ति और निष्काम सेवा भाव से सभी को सहायता प्रदान करते रहें, सहयोग देते रहे। फिर उनके जीवन में एक मोड़ आता है जब वे सांसारिक जीवन के सभी सुखों का त्यागकर हिमालय की ओर आते हैं और माँ गंगा के किनारे साधना करते हैं, तपस्या करते हैं। माँ गंगा के पावन तट पर ही शिवानन्द आश्रम की स्थापना भी होती है। आखिर शिव बिना गंगा के रह सकते हैं क्या? गंगा ही तो शिव की पूरक शक्ति हैं। अर्द्धांगिनी नहीं हैं, लेकिन उनकी जटाओं में वास करती हैं। गंगा पवित्रता की प्रतीक हैं और शिव पूर्णता के। पूर्णता तभी पूर्ण होती है जब पवित्रता हो। पूर्णता और पवित्रता दोनों शुद्ध तत्त्व हैं, और ये दोनों एक-दूसरे से अलग नहीं रह पाते।

स्वामी शिवानन्द जी का जीवन माँ गंगा के तट पर व्यतीत हुआ, और वहीं पर स्वामीजी ने भी अपने गुरु को प्राप्त किया। स्वामी शिवानन्द जी के आदेश से वे उनके मिशन को साकार करने के लिये ऋषिकेश से निकले। संन्यास के समय स्वामी शिवानन्द जी ने हमारे गुरुजी को स्वामी सत्यानन्द सरस्वती का नाम दिया था, और जब वे आश्रम से निकले तो स्वामी शिवानन्द जी स्वयं ये भाव, ये उद्गार प्रकट करते हैं कि मेरा वास्तविक उत्तराधिकारी अब जा रहा है संसार में शिव की ज्योति को फैलाने के लिये। शिव की ज्योति को कौन फैला सकता है? जो स्वयं में सत्य है, और सत्य के लिये सभी स्थान एक प्रकार के होते हैं, वह सर्वत्र व्यप्त होता है। शिवत्व की पूर्णता और गंगा की पिवत्रता का आधार शिव और गंगा दोनों ही हैं, लेकिन सत्य को किसी आधार की आवश्यकता नहीं क्योंकि वह शिव और गंगा का ही अभिन्न अंग होता है। सत्य का प्रचार और प्रसार वाणी या विचार के द्वारा नहीं, बल्कि एक साधना के द्वारा होता है, जिससे मनुष्य तमस् से मुक्त हो सके और सत्त्व में स्वयं को स्थापित कर सके। किसी वैचारिक या सैद्धान्तिक दर्शन के द्वारा

नहीं बल्कि योग साधना द्वारा सत्य का अन्वेषण मनुष्य अपने भीतर स्वयं करता है, और सत्य के अन्वेषण से वह शिवत्व को और पवित्रता को प्राप्त करता है।

जब गुरुजी ने स्वामी शिवानन्द जी के आदेश को साकार करना शुरू किया तो स्वाभाविक रूप से उनके कार्यक्षेत्र का चयन गंगा का मनोरम तट ही बना। वह भी उत्तरवाहिनी गंगा, जो मुंगेर में प्रवाहित होती है। इस प्रकार शिवानन्दाश्रम से



















जो संबंध जुड़ा, शिव और गंगा के साथ, वह शिव के लक्ष्य को पूरा करने के लिये आगे भी जारी रहा। पुन: गंगा के तट पर उस योग साधना का बीजारोपण हुआ, जिस साधना के द्वारा मनुष्य अपने जीवन में श्रेष्ठता, उत्तमता, शांति, सामंजस्य, संतोष और संतुलन का अनुभव कर पाता है। गंगा की पवित्रता गुरुदेव के साथ पूरे विश्व में प्रवाहित होने लगी।

आज गंगा के पावन तट पर द्वादश शिविलांगों का अभिषेक सत्यम् पूर्णिमा के रूप में यहाँ मनाया जा रहा है। यह नाम भी बहुत उपयुक्त है क्योंकि हमारे गुरुजी का जीवन कभी महंत का जीवन नहीं रहा है, बिल्क संघर्षमय जीवन रहा है। योग के प्रचार के िलये बहुत संघर्षमय जीवन व्यतीत किया उन्होंने। जब स्वामी शिवानन्द जी का आदेश उन्हों मिला था और उन्होंने योग का कार्य शुरू किया था, उस समय योग को कोई नहीं जानता था। सब सोचते थे कि यह तो साधुओं के मोक्ष का मार्ग है, गृहस्थों को योग से क्या लेना देना! ऐसा संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करके वे अपने उद्देश्य और लक्ष्य के प्रति, हरेक चीज के प्रति बहुत सजग रहे। हमने कभी स्वामीजी को कहते नहीं सुना कि यह काम हमने किया है। उन्होंने कभी अपने आपको सामने नहीं रखा। एक जिज्ञासु से अपनी यात्रा आरम्भ की और संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करके एक सिद्ध की भाँति अपनी यात्रा समाप्त की। हमलोगों को उनके जीवन में क्रमश: प्रगति दिखलाई देती है, परिश्रम दिखलाई देता है, साधना, श्रद्धा और निष्ठा दिखलाई देती है।

अवसर तो सबको मिलता है, आपको भी मिला है, हमको भी मिला है, औरों को भी मिला है, लेकिन अवसर मिलने पर भी अगर व्यक्ति अपने लक्ष्य से, अपने गुरु से जुड़ा नहीं है तो अवसर का भी कोई महत्त्व नहीं होता। बाहर धूप है, लेकिन आदमी कमरे के अंदर ठण्ड में ठिठुर रहा है। बाहर क्यों नहीं निकलता, अवसर तो है ही। गुरुजी ने पूरी निष्ठा के साथ स्वामी शिवानन्द जी के एक-एक निर्देश को अपने जीवन में चिरतार्थ किया, और उसी शिव ज्योति का प्रसारण सब जगह किया। जिज्ञासु से सिद्ध तक की यात्रा केवल वही व्यक्ति कर सकता है जो निष्ठावान् है, शिव के प्रति समर्पित है और सत्य को आधार बनाकर चलता है। इसलिये सत्यम् पूर्णिमा गुरुजी को समर्पित बहुत उपयुक्त नाम है।

हम आशा करते हैं कि शिंव की आराधना, गंगा का आशीर्वाद और गुरु को समर्पित यह अनुष्ठान सबके लिये मंगलकारी सिद्ध होगा। हमलोग यही प्रार्थना करते हैं कि आने वाले समय के लिये आप सब को सकारात्मकता और ऊर्जा प्राप्त हो। जो भी चुनौतियाँ हमारे सामने भविष्य में उपस्थित होती हैं उन्हें शक्ति और सकारात्मकता के साथ हमलोग पार कर सकें। यही इस सत्यम् पूर्णिमा का फल रहेगा हम सबके लिये।

– 28 दिसम्बर 2020, पादुका दर्शन

आनन्द की अनुभूति

स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती



आज सत्यम् पूर्णिमा की शिव-आराधना का यह अंतिम दिवस है और बहुत ही आनन्द से परिपूर्ण दिवस है क्योंकि सन् 1923 में इसी तिथि को हमारे गुरुदेव का धरती पर अवतरण हुआ था। योग नगरी मुंगेर के लिये यह बहुत गौरव की बात है कि 2020 में हमलोग यहाँ अपने गुरुजी का अवतरण दिवस शिव-आराधना के साथ सम्पन्न कर रहे हैं। यह भी एक अद्भुत संयोग है। 2008 और 2009 में हमलोगों को गुरुजी के जन्मदिवस पर उनका सान्निध्य प्राप्त हुआ था। 2009 में उन्होंने समाधि ग्रहण की और 2010 से 2019 तक रिखिया में योग पूर्णिमा के

कार्यक्रम में हम हमेशा जाते थे। लेकिन मुंगेर के शुभेच्छुओं और भक्तों की इच्छा हमेशा थी कि योग नगरी में गुरुजी का अवतरण दिवस मनाया जाए। बहुतों ने हमसे कहा भी, और हमने यही उत्तर दिया कि जब संकेत मिलेगा तब निश्चित रूप से मुंगेर में मनायेंगे। इस वर्ष शतचण्डी महायज्ञ के प्रथम दिन संकेत और आदेश मिला, और मात्र तीन दिन की अवधि में योग नगरी में इस कार्यक्रम को मूर्त रूप दिया गया। 24 तारीख को गुरुजी के कमरे में दूसरा संकेत मिला कि वे इस अभिषेक का अनुमोदन कर रहे हैं, आशीर्वाद दे रहे हैं। 25 तारीख से फिर हमलोगों ने यहाँ सत्यम् पूर्णिमा का आयोजन किया और आज गुरुजी के अवतरण दिवस को हमलोग मना रहे हैं।

सत्यम् पूर्णिमा के अंतिम चरण में हम आभार व्यक्त करते हैं शिवालय, मुंगेर के पंडितों का जिन्होंने पाँच दिन यहाँ आकर सत्यमेश्वर आराधना सम्पन्न की, युवा योग मित्र मण्डल के सदस्यों का जिनके परिश्रम से एक बहुत सुंदर और अद्भुत कार्यक्रम ने मूर्त रूप लिया है, और सभी नगरवासियों का जिनकी उपस्थिति ने इस आराधना में श्रद्धा भाव की गंगा बहाई है, और यही प्रार्थना करते हैं कि महादेव और गुरुदेव, दोनों हमें शक्ति और सकारात्मकता प्रदान करें ताकि जो भी चुनौतियाँ भविष्य में हमलोगों के सामने आती हैं उनका हम सहजतापूर्वक निराकरण कर सकें।

– 29 दिसम्बर 2020, पादुका दर्शन

Wandering Siva

Swami Niranjanananda Saraswati





Today we come to the conclusion of Satyam Poornima, which has been an incredible event for those who are participating and witnessing it. For me also it has been an incredible experience of pouring twelve kalash of water on twelve Sivalingas. This event of Satyam Poornima is closely connected and linked with the Yoga Poornima celebrations at Rikhiapeeth. You may say that they are connected because the dates are the same, or that the worship of Siva is the same, however that is not the actual connection between Yoga Poornima and Satyam Poornima.

The connection between these two celebrations are two Sivalingas, one has come here from Rikhia and the other one, which is in Munger, is the brother of the Rikhia Sivalinga. These two Sivalings had come to Rikhia before the samadhi of Sri Swamiji and after his samadhi we had placed these two Sivalings on his lap. Afterwards one Sivalinga was brought to Vishwa Yogapeeth, Munger and the other was kept in the room of Sri Swamiji in Rikhiapeeth. Swami Satsangi very

graciously consented to allow the Rikhia Sivalinga to come to Munger for Satyam Poornima, and the Rikhia Sivalinga will go back to Paramahamsaji's room after the completion of my panchagni sadhana.

This Sivalinga is the walking or the travelling Sivalinga moving between Munger and Rikhia during the celebration of Yoga Poornima and Satyam Poornima. In that manner, the presence and the shakti of Sri Swamiji is also here. We can all experience it and feel it. This is also the beginning of a tradition for future generations to know and to follow the connection between the three centres of Yogapeeth, Rikhiapeeth and Sannyasa Peeth. They are the three expressions, missions and visions of our master Sri Swamiji through which the teachings of our Paramguru Swami Sivanandaji are spread to humanity for their upliftment at all levels.

Today is the birthday of our master Sri Swami Satyanandaji and I welcome you all to Satyam Poornima to celebrate this unique event in history with us. It has been a very heart-touching aradhana of Satyam Poornima with the abhishek of twelve Sivalingas.

I would like to express my gratitude to the pandits of Munger Sivalaya, who have come and performed the aradhana of Satyameshwar these five days. I would like to express my gratitude to the members of the Yuva Yoga Mitra Mandal who have given this aradhana a manifest form through their untiring effort. I convey my happiness to the participants, to the citizens of Munger who have offered their bhava to this aradhana, for just as Ganga flows, their sentiment has also flowed. I would like to thank everyone else, the residents, the sannyasins for being the support and inspiration behind this beautiful Satyam Poornima. Finally, we pray to God and to Guru to give us the strength and positivity to face the challenges that are going to come our way in the coming year.

– 29 December 2020, Paduka Darshan

अभिषेकप्रियः शिवः

स्वामी शिवानन्द सरस्वती

अलंकारप्रियो विष्णु:, अभिषेकप्रिय: शिव: — भगवान विष्णु को अलंकार अर्थात् अच्छे वस्न, आभूषण आदि बहुत प्रिय हैं जबिक शिव को अभिषेक पसंद है। शिव मंदिरों में एक तांबे या पीतल का बर्तन रहता है, जिसमें नीचे छेद होता है। वह शिवलिंग के ऊपर लटकाया जाता है, जिससे दिन-रात शिवलिंग पर पानी की धार अनवरत गिरती रहती है। शिव का अभिषेक जल, दूध, घी, दही, शहद, नारियल पानी, पंचामृत आदि से करते हैं। अभिषेक के साथ-साथ रुद्रीपाठ किया जाता है। भगवान शिव अभिषेक से संतुष्ट हो जाते हैं।

समुद्र-मंथन के समय जो विष निकला था, भगवान शंकर ने उसका पान किया और अपने मस्तक को शीतल रखने के लिए गंगा और चन्द्रमा को धारण कर लिया। उनका तीसरा नेत्र अग्नि नेत्र है। लगातार अभिषेक इस नेत्र को ठण्ढा रखता है।

सबसे श्रेष्ठ अभिषेक है शुद्ध प्रेम के जल को हृदय कमल में स्थित आत्मलिंग पर चढ़ाना। भिन्न-भिन्न वस्तुओं से बाह्य अभिषेक शिव के प्रति समर्पण और श्रद्धा विकसित करेगा और अन्त में प्रेम का प्रवाह आन्तरिक अभिषेक तक ले जायेगा।

अभिषेक शिव पूजा का अभिन्न अंग है। बिना अभिषेक के शिव-पूजा अधूरी है। अभिषेक के दौरान विशेष लय और सुर के साथ रुद्रीपाठ, पुरुषसूक्त, महामृत्युंजय जप आदि किये जाते हैं। सोमवार भगवान शिव का विशेष महत्त्वपूर्ण



दिन है और प्रदोष का दिन बहुत पवित्र माना जाता है। इन दिनों पर भक्त भगवान शिव की विशेष आराधना करते हैं।

जब तुम भाव और श्रद्धा के साथ अभिषेक करते हो तो तुम्हारा मन एकाग्र होता है। तुम्हारा हृदय भगवान की कल्पना और दिव्य विचारों से भर जाता है। तुम अपने शरीर का ख्याल भूल जाते हो और आस-पास से बेखबर होते हो। अहं धीरे-धीरे खत्म होता जाता है। जब विस्मरण का भाव आता है तब तुम आनन्द से भर जाते हो और अन्दर स्वर्गीय सुख तथा भगवान शिव की अनुभूति होती है। रुद्री और ॐ नम: शिवाय का सस्वर पाठ तुम्हारे मन को पवित्र कर देगा और उसे सत्त्व से भर देगा।

भगवान शिव का नाम किसी प्रकार से भी स्मरण किया जाय, सही तरह से हो या गलत, सावधानी से हो या असावधानी से, यह निश्चित है कि वह वाञ्छित फल देता है। भगवान शिव के नाम की महिमा को कभी तर्क और बुद्धि से नहीं समझा जा सकता। इसे केवल भक्ति, विश्वास और उनके मन्त्रों के भावपूर्ण जप द्वारा अनुभूत किया जा सकता है। उनका हर नाम अनन्त शक्ति का भण्डार है।

हे साधिक! शिव-नाम की शरण में जाओ। उनके भजन गाओ। नामी और नाम एक ही हैं। प्रत्येक आती-जाती श्वास के साथ उसका नाम स्मरण करो। इस कलि-युग में नाम-स्मरण और संकीर्तन भगवान तक पहुँचने का सबसे सरल, सुरक्षित, त्वरित और विश्वसनीय मार्ग है।

यदि तुम किसी बीमार व्यक्ति के लिये रुद्रीपाठ के साथ अभिषेक करते हो तो वह बीमारी से मुक्त हो जायेगा। लाइलाज बीमारी अभिषेक के द्वारा ठीक हो जाती है। अभिषेक आपको स्वास्थ्य, संपदा, समृद्धि और खुशहाली प्रदान करता है। साथ ही बुरे विचार कम होते हैं और स्वार्थपरता धीरे-धीर समाप्त होती है। ■



IMPRESSIONS



Every leaf, tree and blade of grass looked happy and was dancing in rhythm to the blowing wind. The whole environment felt special, full of joy and liveliness, and unique.

Swamiji's awareness and sensitivity in caring for everyone's comfort, not just humans but also Sivaji's, involving himself fully in every little thing, wearing gloves and mask, gave us all a practical example of thoughtfulness, care and love for everyone.

– Sannyasi Atmarpan

My eyes were attracted to the rainbow flowers. All the colours were there in a harmonious, balanced way. The decoration was in tune with the weather, welcoming and warm. We went under the rainbow and I felt we entered a different dimension with Ganga Ma, Swami Sivanandaji, Paramahamsaji, twelve Sivalingas, Satyameshwar and family and Guruji, with all of us. Satyam Poornima was celebrated for the first time but it felt so natural. Every moment, every movement of Swamiji,

yuvas and sevaks was like a symphony, spontaneous flow of Ganga. It was like something done many times but today it was done on a physical level.

I am sure Sri Swami Sivanandaji and Paramahamsaji were there with us because I was seeing all the qualities they represent around us. From the decorations, pandits, sevaks, yuvas to the performance of abhishek– everything was Satyam, Sivam and Sundaram.

– Sannyasi Bindugyanam

Swamiji's watchful eyes attending to every details and the yuvas who had done all the decoration and preparation for the program assisted the sannyains and Swamiji in the abhishek with such grace, everything seemed to flow so effortlessly and there was such precision with every action. From the chanting of the pandits in Satyameshwar Peeth to the sannyasins, chanting and doing havan, with the sun's rays shining down and the moon watching too, you really did feel transported to a different dimension whre peace and tranquillity prevailed and Satyam, Sivam and Sundaram became an experience actualized.

I felt my mind become silent or the feeling in my heart becoming louder, of presence and gratitude for being part of such a special event, apart from intellectual understanding. Yet feeling so familiar like a sense of returning, a certain divinity permeating the space.

- Sannyasi Devanshi

It was the most beautiful event I have ever witnessed.

– Sannyasi Indrani

Walking towards the amphitheatre, I see Swamiji entering under the rainbow coloured arch and the metaphor comes to mind about finding the pot of gold if one is lucky enough to walk under a rainbow. All the colours are present, those that are radiantly visible and those unseen – the colours of life itself.



Rows of twelve kalashs decorated with a tripundra and the Sannyasa Peeth logo – 144 pots, wow! Yuvas wearing bright yellow kurtas, yellow gloves and black masks filling them with Ganga water. The sight of those yellow-gloved hands handing kalashs to Swamiji who wore geru-coloured gloves and those same gloved hands raised for the final 'Har Har Mahadeva' will stay with me as a 'cellular' memory. Ours is truly the sanatan dharma – adapt, adjust, accommodate – Covid, yes, but life must go on.

Watching the water streaming down over the crystal lingams and the dark magnificence of Satyameshwarji, the profound impression is of the passage of time and the flow of life. It also strikes me that there is a very smooth flow to all the proceedings. A quality of water? No turbulence, no rapids, no whirlpools, just 'go with the flow'.

The Sivalingas are dressed in red and yellow and decorated with marigold garlands, a rose, durva grass and bel leaves before Swamiji performs the final ceremony with dhoop and arati. Satyameshwar receives his shringar for the day, a flower bedecked arch is placed behind him and the silver *chhatri* goes up above him. A silver trishul and a silver spear flank him and little Nandi in front of him is appraising the whole picture.

I watch Swamiji perform pooja to the pictures of Swami Sivanandaji and Paramahamsaji and then his abhishek to the Sivalingas, as always meticulous attention to every detail of worship. One can only behold reverentially. Every idol, icon, picture truly enjoys receiving pooja from our Swamiji because of the bhava with which only he can perform it.

I leave with a full heart and happy tears, contemplating on the qualities of water that can be incorporated for a more meaningful life.

I remember Paramahamsaji saying something like this in a satsang in 2008, "None of you are here because you want to be or you planned it, or because I wanted it. It is because He wants it!' Yes, none of us should forget about grace.

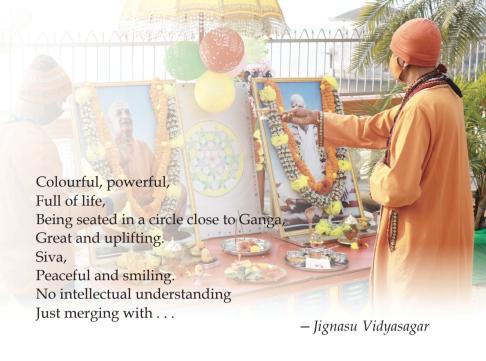
- Sannyasi Niranjani

This is not just the abhishek of twelve Sivalingas but the rays of blessings of guru and Lord Siva which are falling on each and everyone, those who are connected with guru and those who are not. I felt the love and care of guru and Lord Siva for everyone, those who are in the ashram and those who are not in the ashram. No matter what the situation is out in the world, the blessings of yajna and abhishek will reach everyone and all will find the way and light in the deep darkness. A bhajan someone sang is ringing constantly in my ears: Jayati jayati Jai Satyananda, Jayati jayati Jai Satyananda! for it is Swami Satyananda who is present here in the form of beauty, love and knowledge.

– Sannyasi Satkirti

Simple Soft Superb Spectacular Splendid and Sublime Satyam and Sivam were definitely present because Sundaram was undoubtedly experienced

- Sannyasi Vasundhara



The atmosphere had a transcendental quality: the colours, the light, the arrangements as if we were entering another dimension which belonged to Siva as auspiciousness. Swamiji's warm welcome and blissful face and smile inviting us to see everything and be a witness.

The warmth and the elements: earth/grass we were seated on; the water of the Ganga and abhishek; fire of the sun bringing light and life; air as gentle cooling breeze, out in the open, no closed walls; space, the sky as our ceiling, limitless, expansive and giving a sense of timelessness.

Waiting for the aradhana to begin gave the mind time to prepare, to become calm, to drop worries and concerns, to become quiet, open and receptive. The whole time Swamiji, calm, peaceful, smiling and welcoming, organizing everything with clockwork precision with what seemed to be the power of thought. And all the actions proceeded from there.

A feeling of happiness, peace, bliss within and that was visible on the faces of other witnesses around me also!

Thank you, Swamiji!

– Sannyasi Vijayashakti

सत्यम् पूर्णिमा की स्वर्णिम स्मृतियाँ

गुरु भक्ति से गुरु शक्ति का अवतरण

कोविड 19 के चलते मुझे लगने लगा कि गुरु दर्शन से वंचित हो गई हूँ, पर अनायास अंदर से आवाज आती है कि क्यों ऐसा सोचती हो, गुरु तो कण-कण में व्याप्त हैं। मुझे तुलसीदास जी की वह पंक्ति याद आ गयी – हिर ब्यापक सर्बन्न समाना, प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना। ऐसा ही कुछ मेरे साथ हुआ। आश्रम से सूचना मिली कि श्री स्वामीजी के जन्मदिवस पर 25 से 29 दिसम्बर तक पादुका दर्शन में कार्यक्रम है जिसमें सत्यमेश्वर महादेव और 12 अन्य शिवलिंगों का अभिषेक किया जाएगा। श्री स्वामीजी के जन्मोत्सव पर पूज्य गुरुदेव का दर्शन! इससे बढ़कर और क्या होगा?

जैसे हनुमान जी के आदर्श सीता-राम जी थे वैसे मेरे पूज्य गुरुदेव के आदर्श श्री स्वामीजी हैं। तभी तो किसी-न-किसी रूप में आकर भक्त के प्रेम का सबूत देते हैं, चाहे बिछावन का सिलवट, मशहरी का उठा होना या अभी-अभी 24 दिसम्बर की रात्रि में चरण-प्रक्षालन। मेरा तो यह मानना है कि यह गुरु-पाद-प्रक्षालन किसी और ने नहीं, बल्कि मेरी अम्माजी, माता धर्मशक्ति ने ही किया है। आखिर अब अम्माजी भी तो अपने गुरु के साथ सूक्ष्म रूप में विचरण करती होंगी। श्री स्वामीजी के चरण-प्रक्षालन के लिये अम्माजी ही पधारीं और प्रथम शिष्या का परिचय दे गयीं।

हाँ, मैं मानती हूँ कि कुछ लोगों को यह पढ़कर अटपटा भी लग सकता है, पर रामचिरतमानस में भी ऐसे कई उदाहरण आते हैं। जब राम जी ने रावण को मारकर विजय प्राप्त की थी और उनका राज्याभिषेक हो रहा था तो स्वयं दशरथ जी आकर राज्याभिषेक का आनंद लेते दिखे। जब गया में राम और सीता जी पिंडदान कर रहे थे तो स्वयं दशरथ जी ने अपने हाथ बढ़ाकर पिंड स्वीकार किये थे। जब भिक्त में भक्त सदा सराबोर रहता हो तो फिर भगवान और गुरु को आना ही पड़ता है।

हमलोग तो सदा जीवन की सुविधाओं को जुटाने में लगे रहते हैं ताकि इन सुविधाओं से शरीर को आराम मिले, पर पूज्य गुरुदेव जैसे संत अपने आप को तपाने की व्यवस्था में लगे रहते हैं। उनकी यह पंचाग्नि तपस्या और कुछ नहीं, गुरु भक्ति की पराकाष्ठा है, ताकि इस विधा से गुरु शक्ति का अवतरण समय-समय पर होता रहे। यही भक्ति इश्क हकीकी है, जिसे किसी सांसारिक सुख की चाहत नहीं। किसी ने कहा भी है – 'चाह गयी चिंता मिटी मनवा बेपरवाह, जिनको कुछ नहीं चाहिये वो ही शाहंशाह'।

त्याग और वैराग्य जिनकी नियति बन गयी है ऐसे संत के लिये तो गुरु बार-बार प्रफुल्लित होकर आते ही रहेंगे। जब शिवानंद बाबा ने सत्यानंद बाबा को नहीं छोड़ा है, तो अपने सत्यानंद बाबा निरंजन बाबा को कैसे छोड़ेंगे!

– संन्यासी मंत्रनिधि, मुंगेर

यस्य देवे पराभक्ति: यथा देवे तथा गुरौ

मुंगेर नगरी स्वामी सत्यानंद जी की कर्म भूमि रही है और इस भूमि पर उनके जन्मोत्सव की परम्परा को शुरू करना सर्वथा उचित है। पूर्वकाल में जन्म अथवा मृत्यु तिथि का कोई लिखित प्रमाण नहीं होता था। परिवार या समाज के बड़े-बुजुर्गों को तिथि मौखिक रूप से ही याद रहती थी। जब स्वामीजी अपने गुरुदेव की जन्मतिथि का सही-सही पता करने अल्मोड़ा के एक छोटे-से कसबे में पहुँचे तो उन्हें भी कोई लिखित प्रमाण प्राप्त नहीं हुआ, परन्तु वहाँ के बुजुर्गों से यह ज्ञात हुआ कि गुरुजी का जन्म मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा को हुआ था। उस वर्ष यह पूर्णिमा 23 दिसम्बर को पड़ी थी और उस दिन योग के पूर्ण चन्द्र का अवतरण हुआ जिसकी स्निग्ध रिमयों से सम्पूर्ण संसार उद्धासित हुआ। विगत 12 वर्षों से श्री स्वामीजी का जन्मोत्सव रिखिया में योग पूर्णिमा के नाम से मनाया जाता रहा और अब गुरु का स्वप्न-संकेत पाकर स्वामीजी ने मुंगर में सत्यम् पूर्णिमा के नाम से इस परम्परा का श्रीगणेश किया।

संकेत मिलते ही स्वामीजी योगनगरी लौट पड़े। मात्र तीन दिन पश्चात् ही कार्यक्रम शुरू करना था। कई बार स्वामीजी के सत्संग-क्रम में सुना है कि दृढ़ संकल्प, इच्छाशक्ति और क्रियाशीलता असम्भव कार्य को भी संभव कर सकती है। और जब संकल्प एवं इच्छा स्वयं स्वामीजी की हो और युवाशक्ति का गठन हो जाये, तो क्या नहीं हो सकता? देखते-ही-देखते सज गया पादुका दर्शन एक नये अंदाज में। मात्र तीन दिन में स्वप्न ने साकार रूप ले लिया। बिल्कुल वैसा ही दृश्य – पृष्ठभूमि में गंगा और एक कतार में बारह ज्योतिर्लिंग। स्वामीजी द्वारा

सभी शिवलिंगों का गंगाजल के बारह घटों से जलाभिषेक। तत्पश्चात् क्रम से संन्यासियों द्वारा उनका पूजन, अर्चन, शृंगार, भोग और जय शिव ओंकारा की आरती डमरूनाद के साथ। सभी लिंगों ने वस्त्रालंकारों से सुसज्जित और शोभायमान होकर फोटो सेशन भी कराया! पुरोहितों की गुरु-गंभीर वाणी से निरंतर रुद्रीपाठ ध्वनित होता रहा। विभिन्न स्तोत्रों का पाठ और महामृत्युंजय मंत्र हवन, स्वामीजी की अमृतमयी वाणी का प्रवचन, तत्पश्चात् प्रसाद पाकर श्रद्धालुओं का भाव विभोर होकर गृह गमन। यह आयोजन पूरे पाँच दिनों तक चला।



मात्र पचास श्रद्धालुओं से शुरू हुआ यह आयोजन बेहद खास था। सादगी, सौम्यता, सहजता, सरलता और सबसे ऊपर भावना की प्रबलता। साज-सज्जा साधारण परन्तु प्रभावोत्पादकता असाधारण, जैसे गागर में सागर। ज्योतिर्लिंगों की स्थापना भी अध्यात्म और विज्ञान का ही योग थी। मौसम का मिजाज ऐसा बदला कि कड़कड़ाती ठंढ में कड़ी धूप खिल गयी। अब सूर्यदेव स्वयं इस दिव्य दृश्य के दर्शन के लिये प्रगट हुए अथवा महादेव ने तीव्र ठंढ में निरंतर जलाभिषेक के प्रभाव से बचने के लिये उन्हें आदेश दिया, यह तो वे ही जानें! पूरे आयोजन में गुरु-भिक्त की भावना गंगा की लहरों की तरह हिलोरें लेती रही और 'यस्य देवे पराभक्ति: यथा देवे तथा गुरौ' के वेदवाक्य का स्मरण कराती रही।

– मधु रूँगटा एवं शिव रूँगटा, मुंगेर

सरलता में भव्यता

प्रथम सत्यम् पूर्णिमा में भाग लेने हम उत्साहपूर्वक पादुका दर्शन पहुँचे और द्वार से भीतर झाँका तो अति सुन्दर दृश्य को देखकर मुग्ध से वहीं खड़े रह गये। पृष्ठभूमि में विशाल गंगा जी प्रवाहमान हैं, उनके सामने स्वामी शिवानंद जी एवं स्वामी सत्यानंद जी के बड़े-बड़े चित्र बीचो-बीच लगे हैं, और फिर सामने बारह शिवलिंग स्थापित किये गये हैं। सरलता, दिव्यता और भव्यता का अद्भुत संगम! वातावरण में शान्ति, प्रसन्नता और हल्केपन की अनुभूति है। हम सब एक-दूसरे से पर्याप्त दूरी रखते हुए गोलाकार आकृति में बैठे। स्वामीजी स्वयं घूम-घूम कर एक-एक व्यक्ति का स्वागत



करते उसे यथास्थान बैठा रहे हैं। जब सब बैठ गये तो मैंने पुन: दृष्टि घुमाकर देखा, कितना सुन्दर दृश्य! सब कुछ उपयुक्त ढंग से व्यवस्थित होता जा रहा है। जैसे कार्यक्रम स्थल को विशेष रूप से इसी के लिये डिज़ाइन किया गया हो।

रुद्रीपाठ के साथ बारह शिवलिंगों का जलाभिषेक आरम्भ हुआ। युवा योग मित्र मण्डल के सदस्य मिट्टी के सुन्दर पात्र स्वामीजी को दे रहे हैं और स्वामीजी एक-एक कर शिवलिंगों का गंगा जल से अभिषेक कर रहे हैं। हर एक क्षण में पूर्ण व्यवस्था और सामंजस्य है, सहज-निर्बाध जल की धारा के सदृश! पादुका दर्शन परिसर छोटी-सी शिव नगरी में बदल गया है। गुरुमय कहूँ या शिवमय, इस अनुभूति में चार घण्टे एक ही स्थान पर बिना हिले-डुले कैसे बीत गये, पता ही नहीं चला। भीतर में प्रसन्नता व्याप्त है कि स्वामीजी का स्वप्न साकार हो रहा है।

तैयारी के दौरान स्वामीजी द्वारा कहा एक वाक्य दिल में गहरा बैठ गया। स्वामीजी ने एक शिवलिंग स्वामी गोरखनाथ जी को पकड़ाते हुए कहा, 'इसे सीधे लक्ष्य पर ले जाकर रखियेगा, रावण की तरह बीच में मत रख दीजियेगा।' सत्यम् पूर्णिमा हम सबके जीवन में एक नयी प्रेरणा बनकर आयी है। योग, भिक्त और ज्ञान की जिस पूर्णिमा को श्री स्वामीजी और स्वामीजी ने प्राप्त किया है, हम उस दिशा में अब अपनी यात्रा आरम्भ करें और लक्ष्य प्राप्ति तक आगे बढ़ते जायें, बीच में रुके नहीं, ठहरे नहीं, भटके नहीं। जिस पूर्णता को उन्होंने प्राप्त किया है, वहाँ हम सबको भी पहुँचाने के लिये वे तत्पर हैं, यह विश्वास मन में रखकर, श्रद्धापूर्वक उनके दिशा-निर्देशों का पालन करें। सत्यम् पूर्णिमा यही संदेश ले कर आयी है। जय हो!

– स्वामी ज्ञानसिद्धि सरस्वती

शिवयोग

शास्त्रों में शिवयोग पांच प्रकार का बताया गया है — ज्ञानं शिवमयं भक्ति: शैवी ध्यानं शिवात्मकम्, शैवव्रतं शिवाचेंति शिवयोगो हि पंचधा। शिवज्ञान, शिवभक्ति, शिवध्यान और शिवव्रत नामक ये चार भेद शिवपूजा के प्रमुख अंग होने के कारण, शिवपूजा ही असली शिवयोग है। इसी से महासुख की प्राप्ति हो सकती है। इसी से हम सबका कल्याण होगा।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने ऐसा अशुभ एवं दिरद्र के समान वेष बनाने वाले भगवान शंकर को समस्त मंगल, कल्याण तथा सिद्धियों का मूल स्रोत तथा परम कृपालु एवं समस्त श्रेष्ठ गुणों से मण्डित माना है – गरल कण्ठ उर नर सिर माला, असिव बेष सिव धाम कृपाला।

योग मार्ग पर चलने के लिए सबसे पहले अपने हृदय को निष्काम बनाने के लिये प्रार्थना करनी होती है – जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन। सकाम व्यक्ति कोई भी अच्छा काम नहीं कर सकता, न वह उचित बात का निर्णय कर सकता है और न कभी उसे शान्ति या सच्चा सुख ही सुलभ हो सकता है – बिनु संतोष न काम नसाहीं, काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं।

गोस्वामी तुलसीदास जी का रामचिरतमानस काव्य भगवान शिव की कृपा से ही सुन्दरतम बन सका और उससे विश्व का कल्याण हो सका है। सत्यम् पूर्णिमा की शिव-आराधना के माध्यम से संन्यास पीठ पर भी भगवान शिव की कृपा बनी रहे और इसके द्वारा समाज के लोग सुख-शान्ति का अनुभव कर सकें।

– संन्यासी श्रद्धामति



हम में से अधिकांश लोग वर्ष 2020 को अच्छा नहीं मानते हैं अथवा मानते हैं कि यह वर्ष व्यर्थ ही गया और लोगों के लिये सकारात्मक नहीं रहा, क्योंकि इस वर्ष कोरोना महामारी ने विश्वभर के लोगों को पूरी तरह से प्रभावित किया। हमारा देश भी इससे अछूता नहीं रहा। परन्तु एक कहावत है 'अंत भला तो सब भला' और इसे ईश्वर और गुरुओं की कृपा ही कहिये कि यह वर्ष जाते-जाते अपने देश, राज्य और विशेषकर योगनगरी मुंगेर के लिये एक ऐसा पल, एक ऐसा अवसर और उत्सव दे गया, जिसके लिये इसे सदैव याद रखा जायेगा।

एक ओर जहाँ परिस्थितियों के चलते देश-दुनिया की अनेक परंपराओं और उत्सवों पर ग्रहण-सा लग गया है, ऐसे समय योगनगरी मुंगेर में एक नयी परंपरा की शुरुआत होती है सत्यम् पूर्णिमा के रूप में। पादुका दर्शन, मुंगेर में आयोजित प्रथम सत्यम् पूर्णिमा कार्यक्रम में भाग लेना मेरे लिये जीवन के अमूल्य क्षणों में से एक है। मैं अपने आप को अत्यंत सौभाग्यशाली मानता हूँ कि ऐसे समय जब स्वामीजी का दर्शन भी दुर्लभ-सा हो गया है, मुझे उनका सान्निध्य और मार्गदर्शन मिल रहा है।

जब स्वामीजी ने शिवलिंगों पर जलाभिषेक शुरू किया तो हम सब बहुत आह्लादित हो रहे थे। स्वामीजी ने जो स्वप्न देखा था, उसको हम साकार देख रहे थे। साथ-साथ पंडितों का मंत्रोच्चारण आनंद व रोमांच को और भी बढ़ा रहा था। यह दृश्य अद्भुत था, एक साथ बारह शिवलिंगों की पूजा-आराधना। सामने परमहंस जी का आनंद और प्रसन्नता के साथ शिवलिंग पर जलाभिषेक करता हुआ तस्वीर। लगा जैसे परमहंस जी स्वयं इस कार्यक्रम में हम सब के साथ शरीक होकर अपनी कृपा बरसा रहे हों। ऐसा सौभाग्य, ऐसा अवसर देने के लिये मैं स्वामीजी और परमहंस जी का हृदय से धन्यवाद और कोटि-कोटि वंदन करते हुए कहना चाहता हूँ —

बयाँ से परे है तेरे साथ का सुकून गुरुदेव। राह कोई भी हो, बस मंजिल की चाह तुझसे जुड़ी रहे॥

– जिज्ञासु सर्वज्ञमूर्ति, मुंगेर

Satyam Poornima - In the Fullness of Time

Sannyasi Sivadhara

When a magical event unfolds like a beautiful bud opening up to the gentle rays of the sun, nourished by glistening dewdrops, and revealing divine design in its simple grandeur and majesty, the heart is full and the mind stops. Eternal gratitude and deep reverence towards god and guru reverberate within while we gaze on in speechless awe at the privilege of being present on such a special occasion, bathing in its pure peace, joy and light.

The first Satyam Poornima, from 25th to 29th December 2020, was celebrated along the banks of the Ganga at Paduka Darshan, Munger, thirteen years after the first Yoga Poornima dedicated to Sri Swami Satyananda's attainment of the fullness of yoga and to commemorate the day on which he was born – 23rd December 1923 – was celebrated in Rikhiapeeth.

Swami Niranjan had long held the hope of celebrating Sri Swamiji's birthday in Munger, his karma bhoomi, and received permission to do so in an incredible dream on the night after the Sat Chandi Mahayajna had begun in Rikhia on 16th December 2020. The dream revealed twelve Sivalingas being worshipped with abhishek by a Naga sadhu who was pouring water on each Sivalinga from clay kalashs to the chanting of the *Rudripaath* along the banks of a river. Such is the power of a disciple's dedication and love for Guru that an ephemeral image transforms into tangible form, manifesting as a magical event within a few days of its being revealed.

There is a sense of coming full circle and the beginning of a new journey all at the same time: Paduka Darshan was called Anand Bhavan when Sri Swamiji spent chaturmas here in 1956, the very first time he set foot in Munger; Swami Sivananda bestowed his final benediction and blessings upon



his beloved Satyam in this very place. As the seat of Sri Swami Satyananda's third mission, Sannyasa Peeth, this hallowed ground plays host to the first Satyam Poornima and fulfils the longing of his successor and disciple to celebrate his master's birth in the place where the yogic journey began.

The five-day program commences on 25th December, and concludes on the full moon day of Margashirsha, the *tithi* of his birth according to the lunar calendar. This coming together of the sun and the moon was also seen during the closing arati each day as the glowing red ball of the sun was slowly slipping below the western horizon and a pearly moon came up earlier than usual in the east to catch a glimpse of this most beautiful worship.

Yet another element of synchronicity is seen as the invocation of Siva to celebrate the birthday of Satyam started on a Friday, the day dedicated to Devi worship. The perfect balance between core elements creates a space for such an event of immeasurable depth, eternal bliss and beauty to manifest.

The significance of the number thirteen echoes through several aspects of this program. It is thirteen years since the first Yoga Poornima was celebrated in Rikhiapeeth; thirteen Sivalingas receive abhishek and alankara during Satyam Poornima, twelve Sivalingas along the banks of the Ganga with the thirteenth one being Satyameshwar Mahadeva, keeping a benevolent eye over everything from his peeth; before being established in Sannyasa Peeth and receiving the name 'Satyameshwar Mahadeva', this magnificent Sivalinga was the thirteenth in a set of Sivalingas which arrived unannounced at the ashram one day. Twelve of them were of a similar size and were established as the jyotirlinga peeth at the Akhara at Satyam Udyan while 'Sadashiva', as Swamiji referred to him at the time, graced the panchagni vedi till the time he came home to his rightful place at Paduka Darshan.

The word for the number thirteen in Hindi is 'tera' which also means 'that which is yours'. Everything that is offered to guru and god is only what we have received from them, reflecting the saying tera tujha ko arpann, 'we dedicate to you that which is yours'. Full circle again . . .

During the Lakshmi-Narayana Mahayajna earlier this year, Swamiji had given us the message to develop positivity, balance, organization and restraint as the prasad of the yajna so that we may truly experience the grace of Sri Narayana and Lakshmiji in our lives. All four qualities came together in an incredibly beautiful symphony, filling the air with joy and peace, lightness and bliss all through Satyam Poornima.

Deep conviction in positivity, firm commitment to expressing balance, determined and dedicated effort towards organization and an adherence to restraint were expressed in every aspect of the program.

Quietly sincere and tireless seva was offered by members of the Yuva Yoga Mitra Mandal – from the beautiful floral decorations to meticulously arranging everything for the abhishek and assisting Swamiji with smooth, perfect coordination.

The pandits from the Sivalaya temple in Munger chanted the *Rudripaath*, conducting the worship of Satyameshwar Mahadeva inside the peeth as Swamiji offered abhishek to the twelve Sivalingas on the lawn outside and sannyasins dressed and decorated them before Swamiji performed arati and pooja with indescribable grace and devotion.

Swamiji personally welcomed and seated sannyasins and guests all around the amphitheatre.

Respecting the requisite protocol of the Covid pandemic situation, all the participants wore masks and maintained social distancing while Swamiji, the sannyasins and yuvas wore gloves while performing pooja.

There was a smooth flow of participants arriving at the program venue and performing parikrama before leaving the premises.

Sannyasins chanted mantras during the havan and their stotras blended with the pandits' *Rudripaath*, ending with arati.

Everything became part of a single seamless flow, blending together and creating a beautiful ballet that could only have been choreographed by a master.

The setting was perfect. Coming into the amphitheatre through the 'rainbow', there was a distinct experience of entering a different *loka* – *Sivaloka*: Ganga Ma flowing gently in the background, Swami Sivanandaji and Sri Swamiji showering their blessings upon everything from photographs that truly came alive with Swamiji seated next to them, the palm trees around the lawn swaying in a delicate dance to melodious chanting, an unusually warm December sun and eagles circling overhead, swooping low every now and then as if to have a closer look at the row of twelve Sivalingas on their pedestals in the centre of the lawn.

Each of the Sivalingas had a distinct personality and came together in an amazingly harmonious and complementary manner, different expressions of what is essentially the same element. Every evening they went back into Satyameshwar Peeth, which glowed all night in the light of their deepaks, waiting to emerge the next day for abhishek and alankar.

There was also a fine balance between the tattwas with the tangible and intangible presence of the jal tattwa manifesting

in myriad ways. The first experience was of a magical darshan Sri Swamiji himself bestowed on the eve of the program in the form of pure, crystal-clear water which appeared in his room at Ganga Darshan. Warm rays of the sun were shining down upon the ground where we were seated, along the banks of the gently flowing Ganga. A steady flame during the daily havan burnt bright, undisturbed and unruffled by the breeze, as if the proximity and presence of the water calmed the fire. Sri Lakshmi and Narayana along with Krishna and Radha in their peeth were wearing raiment reflecting deep blue water glistening with silver, while Swami Sivananda and Sri Swamiji watched over us from an ethereal azure space. As the copper path of the setting sun reflecting upon the surface of the river slowly faded, a translucent pearly moon was already high in the eastern sky, its cooling rays spreading a satin sheen on the water.

With hearts full, eyes misty with tears of joy and heads held high in humble pride for the privilege of being present at this magical celebration.

Swamiji had guided every single movement of this symphony, each note ringing perfectly true and clear in love, devotion and joy. It was indeed a privilege to have participated in this momentous occasion dedicated to our beloved



Sri Swamiji. Let us honour him by endeavouring to walk firmly ahead along the path he has shown us to bring truth, auspiciousness and beauty into our lives and share the gifts we have received in abundance with everyone around us.

May we become tiny little drops in this beautiful river, the divine mission and vision of our masters which flows ceaselessly with the inspiration of Sivam, Satyam and Sundaram. *Jai Ho!*

To Become One

Swami Niranjanananda Saraswati



Even if the rock is made into a murti, an image or idol, the consciousness within it will remain dormant as long as it is left alone. The moment one identifies the murti as something and projects one's feelings, faith and devotion onto it, the consciousness changes.

Stimulation causes an awakening to take place in the nascent consciousness of the rock, and it enters the dreaming stage. In

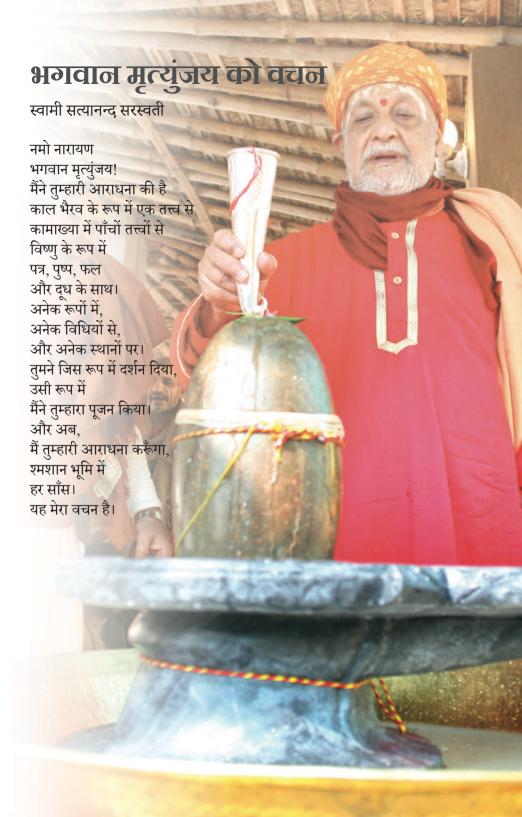
the dream state, the consciousness is not aware, yet at the same time it is active. If the piece of rock continues to be the object of adoration and reverence, and one gives one's consciousness to it in this way, its dream state will eventually become illuminated.

A stone like the Sivalingam in Baidyanath Dham, Deoghar, towards which people have expressed their faith and devotion for many generations, has become vibrant, illuminated. Whether this Sivalingam is seen as Siva, as a rock or as a hole in the ground covered with water is not important. The reality is that generations of people have awakened the consciousness of that stone with their faith. It has consciousness; it is vibrating, it is illuminated.

Sivalingam is not only an image, but a philosophy to discover the awakening of consciousness. Since people don't know and don't have the understanding, for them it has become a religious ritual. Abhishek is a tantric expression of invoking the cosmic power through the use of mantras. *Abhishek* means anointment, anointing. While one is performing the anointment, one is not only a performer, one becomes the person who is being anointed too. One has to be one with the activity. When one is performing abhishek, one becomes the Sivalinga, one becomes that symbol.

There was a saint in the eighteenth century. One day, people found him doing some strange things during abhishek. They found him sitting there pouring half the items on the Sivalinga and half the items on himself. So people asked him, "Why are you doing that? Half the milk on the Sivalinga, and half the milk on yourself. Half the yogurt on the Sivalinga, half the yogurt on yourself."

The saint replied, "Well, I don't see any difference between that and myself. That is me, I am that." Of course this level of realization is the last level. When all the earthly attachments and bondages are cut and one becomes totally immersed in identifying with that energy, such a change and such a statement can take place. This is the idea of abhishek: to connect with the most ancient idea, to connect to one's higher self, God.

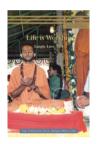




Satyam Tales सत्यम् गाथाएँ

Satyam Tales depict the life and teachings of our beloved guru, Sri Swami Satyananda Saraswati. Through the medium of these simple narratives, we hear the voice of Sri Swamiji inspiring one and all. The stories are a delightful read for children, adults and old alike, conveying an invaluable message for those engaged in the world and for those seeking the spirit. These tales will touch your heart and give you joy, hope, conviction and, above all, faith.









For an order form and comprehensive publications price list, please contact:

Yoga Publications Trust, PO Ganga Darshan, Fort, Munger, Bihar 811 201, India.

Tel: +91-09162 783904, 06344-222430, 06344-228603

A self-addressed, stamped envelope must be sent along with enquiries to ensure a response to your request.



अस्ति हुन एक द्वैभाषिक, द्वैमासिक पत्रिका है जिसका सम्पादन, मुद्रण और प्रकाशन श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के संन्यासी शिष्यों द्वारा स्वास्थ्य लाभ, आनन्द और प्रकाश प्राप्ति के इच्छुक व्यक्तियों के लिए किया जा रहा है। इसमें श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती, श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती एवं स्वामी सत्यसंगानन्द सरस्वती की शिक्षाओं के अतिरिक्त संन्यास पीठ के कार्यक्रमों की जानकारियाँ भी प्रकाशित की जाती हैं।

सम्पादक – स्वामी ज्ञानसिद्धि सरस्वती सह-सम्पादक – स्वामी शिवध्यानम् सरस्वती संन्यास पीठ, द्वारा-गंगादर्शन, फोर्ट, मुंगेर 811201, बिहार, द्वारा प्रकाशित। थॉमसन प्रेस इण्डिया लिमिटेड. हरियाणा में

© Sannyasa Peeth 2021

मुद्रित।

पत्रिका की सदस्यता एक वर्ष के लिए पंजीकृत की जाती हैं। देर से सदस्यता ग्रहण करने पर भी उस वर्ष के जनवरी से दिसम्बर तक के सभी अंक भेजे जाते हैं। कृपया आवेदन अथवा अन्य पत्राचार निम्नलिखित पते पर करें –

संन्यास पीठ

पादुका दर्शन, पी.ओ. गंगा दर्शन, फोर्ट, मुंगेर, 811201, बिहार, भारत

☑ अन्य किसी जानकारी हेतु स्वयं का पता लिखा और डाक टिकट लगा हुआ लिफाफा भेजें, जिसके बिना उत्तर नहीं दिया जायेगा।

कवर एवं अन्दर के रंगीन फोटो : सत्यम् पृर्णिमा 2020, पाद्का दर्शन, मुंगेर Registered with the Registrar of Newspapers, India Under No. BIHBIL/2012/44688

Important Notice for all Subscribers

Blessed Self Jai Ho

We are happy to bring the joyous news that from January 2021, the *AVAHAN* magazine is available FREE of COST to all subscribers, supporters, aspirants, devotees and spiritual seekers at –

www.sannyasapeeth.net

Due to the ongoing coronavirus pandemic and uncertainties associated with it, the printed copies of the *AVAHAN* magazine will not be available in 2021 for circulation to subscribers. Therefore, NO new or renewal of previous subscription is being accepted for this magazine for 2021, so please do NOT send any membership for the magazine.

You will be notified from time to time regarding the magazine and any new developments.

In the meantime, continue to imbibe the message of sannyasa and to live the teachings of Sri Swami Sivananda Saraswati and Sri Swami Satyananda Saraswati to improve and better the quality of your life.

With prayers and blessings of Sri Swami Satyananda Saraswati for your health, wellbeing and peace.

Om Tat Sat The Editor